विचार बिन्दु

जो पुत्र पैदा ही न हुआ हो अथवा पैदा होकर मृत हो अथवा मूर्ख हो। इन तीनों में पहले दो ही बेहतर हैं। न कि तीसरा, कारण यह है कि प्रथम दोनों तो एक बार ही दुःख देते हैं। जबकि तीसरा पद-पद दुःखदायी होता है।

–हितोपदेश

भाग्यशाली हैं कि आप अब तक बचे हुए हैं

शीर्षक पढ़कर आप चौंकिए मत। इस आलेख को अंत तक पढ़ने के बाद आप भी यही कहेंगे कि हम भाग्यशाली हैं कि हम अब तक बचे हुए हैं।

हम प्रतिदिन जो चीज़ें खाते हैं या पीते हैं, उनमें न केवल कई प्रकार के रसायन मिले होते हैं, जिनमें से कई कैंसर को जन्म दे सकती हैं। इसी प्रकार पीने का पानी और साँस लेने वाले वायु में भी कई विषाक्त तत्व मिले हैं। इसके बावजूद यदि हमें अभी तक कैंसर नहीं हुआ है तो यह केवल हमारा भाग्य है।

देश में प्रतिवर्ष दो लाख से अधिक व्यक्ति सड़क दुर्घटनाओं में मृत्यु को प्राप्त होते हैं। हम भी सड़कों पर चलते हैं, वाहन चलाते हैं, और अब तक यदि हम जीवित है, तो इसे हमारी किस्मत ही कहा जाएगा। क्या कारण है कि ट्रैफिक नियमों का पालन करने वाला वाहन चालक एवं उसमें बैठे सहयात्री, अन्य वाहन की तेज गति के कारण अथवा वाहन चालक को नींद की झपकी आने के कारण हमारे वाहन को टक्कर मार देता है और बिना किसी गलती के, कार का चालक एवं उसके साथी परिजन असमय ही काल कवलित हो जाते हैं। ऐसा क्या कारण है सिवाय हमारे भाग्य के, कि हम पैदल सड़कों पर प्रतिदिन घूमते हैं, क्योंकि अतिक्रमणकारियों ने फुटपाथ तो पैदल चलने वालों के लिए छोड़े ही नहीं है, और कोई वाहन अब तक हमें कुचलकर नहीं निकला है। हम भाग्यशाली तो हैं ही, अन्यथा हम भी अनेक पैदल घूमने वालों एवं यातायात के नियमों का पालन करने वालों की तरह, अब तक कहीं ना कहीं, मौत का शिकार हो चुके होते।

ऐसा लिखते समय मुझे राजस्थान के पूर्व गृह सचिव विजय शंकर सिंह की याद आ रही है जो अपने घर के पास ही पैदल सुबह घूमने निकले थे, किंतु एक तेज वाहन ने उन्हें कुचल दिया था। इसी प्रकार सलमान खान की गाड़ी ने मुंबई में फुटपाथ पर सोने वाले या जयपुर में तेज गति से दौड़ रही कार ने सरस डेयरी के पास फुटपाथ पर सो रहे मजदूरों को मौत के घाट उतार दिया था। इसे उनकी खराब किस्मत ही कहा जाएगा और हमारे साथ अब तक ऐसा नहीं हुआ तो यह भी हमारी किस्मत के ही कारण तो है।

मैं बारां शहर में, जहां मैं कलेक्टर की तरफ पद स्थापित था, प्रतिदिन प्रातः घूमने के लिए शहर की सड़कों पर निकलता था। ऐसा करते समय मैं निहत्था होता था और साथ में किसी प्रकार का कोई अंगरक्षक भी नहीं चलता था। इसके बावजूद यदि किसी ने कोई शारीरिक क्षति नहीं पहुंचाई तो, यह मेरा भाग्य है, अन्यथा मैं भी सत्येंद्र दुबे अथवा मंजू नाथ की तरह किसी के द्वारा निशाना बनाया जा सकता था। इन अधिकारियों को केवल इसलिए मार दिया गया कि ये अपना काम पूरी ईमानदारी और निष्ठा से कर रहे थे। प्रशासनिक सेवा के लगभग 38 वर्षों के सेवाकाल में निश्चित रूप से मैंने ऐसे अनेक निर्णय लिए होंगे, जिनसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली-बलशाली व्यक्तियों के हितों को आघात पहुंचा होगा। इनमें से सभी ने मेरे ऊपर दया दृष्टि दिखाई और मुझे किसी प्रकार की शारीरिक क्षति नहीं पहुंचाई। इसी कारण में अब तक जीवित हूं और गरिमापूर्ण तरीके से जीवनयापन कर रहा हूं। यह भी तो मेरा भाग्य ही है। मेरा एवं मेरे जैसे अनेक अधिकारियों के साथ भी यही स्थिति है।

जिस सरलता और बहुलता से आजकल साइबर फ्रॉड हो रहे हैं, उनको देखकर तो लगता है कि हमारे बैंक खाते से यदि सारी जमा पूंजी नहीं निकाल ली गई, तो हमें खैर मनानी चाहिए कि हम अब तक बचे हुए हैं।

आपने किसी सरकारी अधिकारी, कर्मचारी के भ्रष्टाचार को उजागर किया और अब तक आप पर जानलेवा हमला नहीं हुआ तो आप खुशकिस्मत हैं। यदि ऐसा आपको नहीं लगता, तो आप बाड़मेर जिले के काना राम से जाकर पूछिये जिसके पैर तोड़ कर उसे अपंग इसलिए बना दिया गया कि उसने सरपंच और ग्रामसेवक के भ्रष्टाचार को सामने लाने हेतु सूचना के अधिकार कानून के अंतर्गत सूचना मांगने का दुस्साहस किया था।

यदि आप सरकार के गलत निर्णयों, नीतियों की आलोचना करते हैं और सत्ताधीश के गुणगान नहीं करते, फिर भी आपको किसी झूठे मामले में फंसाया नहीं गया है, तो आप किस्मत वाले हैं। आपके द्वारा किए गए विरोध को अब विद्रोह मानकर अब तक आपको अनिश्चितकाल के लिए जेल में नहीं डाल दिया गया तो भी आपको ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिए।

हम प्रतिदिन जो चीज़ें खाते हैं या पीते हैं, उनमें न केवल कई प्रकार के रसायन मिले होते हैं, जिनमें से कई कैंसर को जन्म दे सकती हैं। इसी प्रकार पीने का पानी और साँस लेने वाले वायु में भी कई विषाक्त तत्व मिले हैं। इसके बावजूद यदि हमें अभी तक कैंसर नहीं हुआ है तो यह केवल हमारा भाग्य है।

यदि आप ग्रामीण किसान हैं और आपकी भूमि किसी दूसरे के नाम पर दर्ज करके आपको न्यायालय के चक्कर लगाने हेतु विवश नहीं कर दिया गया है, तो आप पर राजस्व अधिकारियों की मेहरबानी है, अन्यथा पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी ही भूमि अपने नाम कराने के लिए अदालतों के चक्कर ही काटने के लिए बाध्य हो जाते। यदि आप अपनी कृषि भूमि का आपसी बंटवारा करना चाहते हैं और उसमें भी यदि राजस्व विभाग के अधिकारी टांग नहीं अड़ा रहे हैं तो मानिए कि अनावश्यक कानूनी मुक़दमे बाजी से बच गए हैं।

यदि आप व्यापारी हैं और अपना व्यवसाय इमानदारी से कर रहे हैं, तब भी किसी कागज की कमी के कारण यदि आपको किसी कर अधिकारी ने अनावश्यक परेशान नहीं किया तो शायद आपके कुछ अच्छे कर्म ही रहे होंगे, अन्यथा जिस प्रकार व्यापार करने वालों को अधिकारियों द्वारा परेशान किया जाता है, यह किसी से छिपा हुआ नहीं है। यदि आप किसी बीमारी से पीड़ित हो जायें और अस्पतालों में यदि आपका शोषण ना हो और आपकी अनावश्यक कई जाँचें ना करा ली जायें, जिससे आपका घर-बार भी बिक जाए, तो मानिए कि आप पर ईश्वर की कृपा है। अन्यथा, आज के निजी अस्पताल आवश्यक-अनावश्यक बहुत महंगी जाँचें करा कर अपना एवं चिकित्सकों का हित ही साधने में लगे हुए हैं। यदि आप एक स्वाभिमानी, संवेदनशील और ईमानदार चिकित्सक हैं और किसी एक अस्पताल में कार्यरत हैं और फिर भी आपको कमाई का लक्ष्य नहीं दिया गया है, तो मान लीजिए कि आप बचे हुए हैं और इसके लिए आपको, अपने ग्रहों को धन्यवाद देना चाहिए।

यदि आप एक जागरूक नागरिक हैं और आपने अपने क्षेत्र में चल रहे अवैध खनन कार्य और परिवहन माफिया अथवा शराब माफिया के बारे में अधिकारियों को चेताया एवं समाचार पत्रों में भी इस बारे में लिखा है और फिर भी आपका कोई बाल बांका नहीं हुआ तो आपको आश्चर्य होना चाहिए कि ऐसा कैसे नहीं हुआ? वरना तो हम दिन प्रतिदिन पढ़ते हैं कि किस प्रकार बजरी माफिया के लोग मिलकर पुलिस - खनन अधिकारियों आदि को अपने वाहनों के नीचे लाकर कुचल देते हैं। यदि आपको, अपने मकान से किसी ने बलपूर्वक अभी तक नहीं निकाल दिया है तो आपको शुक्र मनाना चाहिए। आजकल जिस प्रकार से असामाजिक तत्वों द्वारा अपने खुद के मकान में रह रहे लोगों को किसी झूठे-सच्चे आधार पर निकालने की घटनाएं पढ़ने में आती हैं, उससे तो लगता है कि जो व्यक्ति अपने मकान में रह पा रहा है वह भी एक प्रकार से बचा हुआ ही है। यदि आप शिक्षक हैं और आपने किसी गुंडे छात्र अथवा राजनीतिक दबाव के कारण किसी छात्र को अधिक अंक नहीं दिए और फिर भी आपका स्थानांतरण नहीं हुआ अथवा कोई नुकसान नहीं हुआ, तो फिर मानिये कि आप भाग्यशाली हैं। यदि आप प्रतिभाशाली हैं और यदि आप का चयन हो गया और उसके लिए न बड़ी धनराशि खर्च करनी पड़ी ना किसी बड़े व्यक्ति की सिफारिश करानी पड़ी, तो मान के चलिए कि आप सामान्य व्यक्ति नहीं हैं, अपितु असामान्य भाग्य के धनी हैं। अन्यथा आजकल जिस प्रकार से नकल माफिया प्रश्न पत्र बेचने का काम कर रहा है उससे तो नितांत साधारण प्रतिभा वाले अभ्यर्थी, पैसा खर्च करके सेवा में चयनित हो रहे हैं।

यदि आप महिला हैं और अपने विद्यालय, कार्यस्थल या अपने परिवार में ही यौन शोषण का शिकार नहीं हुई हैं तो कुछ प्रतिशत खुश किस्मत महिलाओं में हैं।

यदि आप जनप्रतिनिधि हैं, चाहे पंचायत स्तर से लेकर संसद तक, और आप केवल मात्र जनता और राष्ट्र की सेवा के कार्य में संलग्न हैं तथा अपने दल के लिए धनराशि एकत्र करने का काम नहीं कर रहे हैं और इसके बावजूद आपका टिकट चुनाव में नहीं कट रहा है तो इसे आप अपने पूर्व संचित पुण्य का फल ही मान सकते हैं। अन्यथा, आज की राजनीति में तो वही टिका रह सकता है जो साम, दाम, दंड, भेद का प्रयोग करके अपना और अपनों का खजाना भर सके।

आप सरकारी इंजिनीयर हैं और आपने गुणवत्ता बनाए रखते हुए ठेकेदार से पूरा कार्य करवाया और कमीशन तक नहीं लिया तो शुक्र मानिये कि आपको मौत के घाट नहीं उतार दिया गया। यदि आप ठेकेदार हैं और बिना कमिशन दिए अच्छा काम करते हैं और फिर भी आपको काम मिलता रहे तो यह असामान्य है, क्योंकि अधिकांशतः ऐसे ठेकेदारों को विभागों में पसंद नहीं किया जाता है।

यदि आप उद्योगपति हैं और आप सत्ताधारी दल को अच्छा-खासा चंदा नहीं देते, फिर भी आपके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं होती, तो आपको खुश होना चाहिए, क्योंकि वास्तविकता यही है कि अपने उद्योग को तेजी से बढ़ाने के लिए सत्ता धारी दल को उपकृत करना अनिवार्य है।

कोई स्वैच्छिक संस्था दलित, आदिवासियों को पर्यावरण अपने हितों की रक्षा के लिए सरकार के विरुद्ध संगठित करें और फिर भी उनका एफ सी आर ए लाइसेन्स निरस्त नहीं हो तो उसे शुक्र मनाना चाहिए वरना संस्थाएं वही फल फूल रही हैं जो सरकार का गुणवान करने में संलग्न हैं। पर्यावरण की निरंतर अनदेखी का ही परिणाम है कि जोशी मठ जैसा पवित्र तीर्थ स्थल ध्वस्त होने के कगार पर है।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि वर्तमान समय में ऐसे अनेक कारक हैं जो नागरिक को गरिमा पूर्ण जीवन से वंचित करने को तत्पर हैं। इसके बावजूद यदि कोई अपना गरिमापूर्ण अस्तित्व बचाए रख पाता है तो उसे स्वयं को सौभाग्यशाली ही मानना चाहिए। यह स्थिति जितनी जल्दी बदले उतना अच्छा है ताकि प्रत्येक नागरिक निश्चिंत होकर गरिमा के साथ जी सके।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

ज्ञान-विज्ञान-अनुसंधान-उपचार

हर चिकित्सकीय उपचार - दवा, शल्यक्रिया या अन्य विधि - उसकी सार्थकता की लाभानुभूति का एक पक्ष होता है, प्लेसीबो एफेक्ट जसके अनुसार लाभानुभूति दवा या उपचार से नहीं वरन् उसकी सार्थकता में विश्वास के कारण होती है। दवा के लिए यह आकलन करना सरल है। रोगियों का दो समूह में बांटा जाता है– एक को असली दवा और दूसरे को दवा जैसा दिखने वाला साधारण पदार्थ। किस को क्या दिया गया है, रोगी को नहीं मालूम होता है। लाभानुभूति का आकलन किया जाता है। जिनको असली दवा मिली उनमें कितना प्रतिशत में लाभ हुआ और जिनको दवा की जगह साधारण पदार्थ दिया गया उनमें कितने प्रतिशत में। दूसरे, यानी कंट्रोल ग्रुप में जो लाभ हुआ वह दवा के कारण नहीं है। निष्कर्ष कंट्रोल ग्रुप में भी उतना प्रतिशत लाभ तो विश्वास के कारण ही है। अगर दोनो ग्रुप में लाभानुभूति का प्रतिशत बराबर है तो इसका मतलब होगा कि दवा का कोई असर नहीं। लेकिन शैल्य क्रिया में ऐसा आकलन करना मुश्किल होता है, कारण कौन झूंठी शैल्यक्रिया करवाने की अनुमति देगा। बिना स्वेच्छिम स्वीकृति के यह नहीं किया जा सकता। लेकिन यह आवश्यक है और अब किया भी जा रहा है।

एक रोग है पारकिन्सन डिजिज पैरालिसिस एजिटान्स। इसमें व्यक्ति का अपनी मांसपेशियों को स्वेच्छा और समन्वित रूप से संचालित करने की क्षमता क्षीण हो जाती है। पूरे शरीर की मांसपेशियों में जकड़न आ जाती है, व्यक्ति चाह कर उन्हें ढीली नहीं कर पाता। चेहरे की मांसपेशियों में जकड़न के फलस्वरूप चेहरा भाव सून्य हो जाता है, ऐसा लगता है जैसे कोई मुखोटा (मास्क) पहन रखा हो। शरीर की मांसपेशियों की जकड़न से व्यक्ति ऐसे चलता है जैसे पूरा एक लकड़ी का लट्ठा हो। छोटे-छोटे जल्दी-जल्दी चले अनियंत्रित कदम ';शफ्लिंगगेट'। आगे झुके बदन के कारण ऐसा लगता है जैसे अपनी ग्रेविटि को ही पकड़ने की कोशिश कर रहा हो। साथ ही जब आराम कर रहे हो तब हाथों में विशिष्ट प्रकार का कंपन। उंगलियों में सतत ऐसी हरकत जैसे चूरण की गोलियां बना रहे हो और साथ ही हाथ ऐसा हिल रहा हो जैसे ढोलक बजा रहे हों। ';पिलरोलिंग एन्ड ड्रम बीटिंग' लेकिन यह हरकत केवल तभी जब हाथ से कोई काम न कर रहे हो हाथ से काम करते ही कंपन खतम।

विस्तृत अनुसंधान से ज्ञात हुआ कि यह रोग मस्तिष्क के काले रंग के

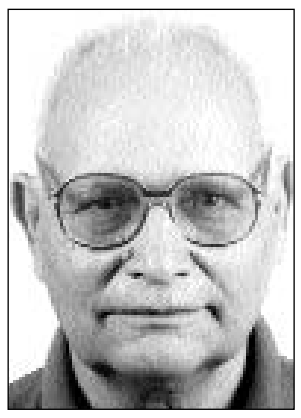

डॉ. श्रीगोपाल काबरा

सबस्टेंसिया नाइग्रा नामक स्थान, जो मध्य मस्तिष्क (मिड ब्रेन) में स्थित होता है, की कोशिकाओं के डोपामिन नामक न्यूरोट्रांसमीटर हॉर्मोन बनाना बंद करने से होता है। डोपामिन मस्तिष्क के कार्पस स्ट्रायटम द्वारा मांसपेशियों के सुचारू समन्वित संचालन की प्रक्रिया के लिए आवश्यक होता है। सबस्टेंसिया नाइग्रा से डोपामिन न आने पर मांसपेशियों का कार्य संचालन गड़बड़ा जाता है। यह था इस रोग सम्बन्धी अनुसंधान परक ज्ञान।

अब विज्ञान की बारी। ऐसी दवाओं की खोज हुई जो डोपामिन का काम कर सके। लेवोडोपा और उसके जैसी दवाओं से कुछ राहत मिली। वैज्ञानिक प्रगति से मालूम हुआ कि भ्रूण में ऐसी कोशिकाऐं होती हैं जो मस्तिष्क की नई कोशिकाओं को जन्म दे सकती हैं। भ्रूण में ऐसी काशिकाओं को खोजा गया जो डोपामिन बना सकती है। फिर प्रयोग कर देखा गया कि क्या ये काशिकायें सबस्टेंसिया नाइग्रा का स्थान ले सकती हैं। प्रयोग के सफल पाये जाने पर तकनीक विकसित की गई। सात से आठ सप्ताह के गर्भपात से मिले मानव भ्रूण से ऐसी कोशिकायें एकत्रित कर उनका संवर्धन किया। फिर अत्याधुनिक न्यूरो सर्जिकल तकनीक से रोगी की खोपड़ी में छेद कर संवर्धित कोशिकाओं को कोर्पस स्ट्रायटम में इन्जेक्ट किया गया। प्रयोग सफल हुआ। इन्जेक्ट की गई कोशिकाऐं न केवल जीवित रही वरन् और नई कोशिकाऐं बना कर डोपामिन स्रावित करने लगी। आकलन पर रोगियों में इसे लाभकारी पाया गया। एम्ब्रियोनिक स्टेम सेल ट्रांसप्लांट की यह विधि पारकिन्सन डिजिज के रोगियों की शल्य चिकित्सा के रूप में मान्य हो गई। 1990 के दशक में डॉ. फ्रीडमैन और उनके साथी इस विधि से उपचार करने वालों में प्रमुख थे।

दस साल बाद डॉ. फ्रीडमैन के ग्रुप ने इस शल्य चिकित्सा से होने वाले कथित व प्रचारित लाभ का विधिवत डबल ब्लांइण्ड कंट्रोल विधि से मुल्यांकन किया। 40 रोगयों को दो समुह में बांटा गया। आधों में विधिवत पूरी शल्यक्रिया कर बाकायदा भ्रूण कोशिकाओं को रोगी के मस्तिष्क में पुटामेंन में इन्जंक्ट किया गया (टेस्ट ग्रुप)। समूह के आधे रोगियों में खोपड़ी में छेद तो वैसे ही किए गये पर न अन्दर सुई डाल गई और न भ्रूण कोशिकाऐं। केवल दिखावा किया गया जिस से रोगी को भ्रम बना रहे (प्लसीबो ग्रुप)। किस रोगी में असल आपरेशन किया गया है और किस में मात्र खोपड़ी में छेद किऐ गये हैं रोगी को नहीं मालूम। न ही रोगियों में शल्यक्रिया से लाभ का मूल्याकन करने वाले चिकित्सकों को यह बताया गया। प्रचारित लाभ की अवधारणा गलत साबित हुई। प्लेसीबो ग्रुप की तुलना में टेस्ट ग्रुप में कोई विशेष लाभ नहीं पाया गया। वरन् एक साल के बाद तो कुछ में भ्रूण कोशिकाओं की अनियमित सक्रियता से असहनीय कॉम्प्लीकेशन हुई। कल का विज्ञान अब अज्ञान साबित हुआ।

डॉ. श्रीगोपाल काबरा,
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

वॉलीबॉल प्रतियोगिता में बेटियों ने जीता गोल्ड मैडल

कांग्रेस के पदाधिकारिओं ने वॉलीबॉल प्रतियोगिता में गोल्ड मैडल जीतने पर बेटियों का स्वागत किया।

- गांव कानावासी एवं हमीरवास की बेटियों ने रचा इतिहास
- सादुलपुर पहुंचने पर डीजे पर विजय जुलूस निकाला

सादुलपुर, (निसं)। 44 वीं सब जूनियर नेशनल वॉलीबॉल प्रतियोगिता में राजगढ (चूरु) के गांव कानावासी एवं हमीरवास की बेटियों द्वारा इतिहास रचते हुए गोल्ड मैडल जीतकर क्षेत्र में लौटने पर कांग्रेस पदाधिकारियों ने बेटियों का जोरदार स्वागत किया। 44 वीं सब जूनियर नेशनल वॉलीबॉल प्रतियोगिता में राजगढ (चूरु) के गाँव कानावासी निवासी स्नेहा सवावग एवं हमीरवास निवासी प्रियंका सांगवान ने गोल्ड मैडल जीतकर क्षेत्र का नाम रोशन किया है।

दोनों बेटियों के सोमवार को सादुलपुर पहुंचने पर डीजे पर विजय जुलूस निकाला गया। वहीं स्नेहा सरावाग कानावासी, प्रियंका सांगवान हमीरवास के राजगढ पहुँचने तथा अपने माता-पिता,गाँव औरर तहसील राजगढ का नाम पूरे देश मे रोशन करने पर सीताराम प्रजापत शहर ब्लॉक अध्यक्ष, अशोक पूनिया ग्रामीण ब्लॉक अध्यक्ष, पीसीसी सदस्य शिशुपाल पूनिया, विजय पूनिया पंचायत समिति सदस्य, श्याम सुंदर पूनिया, रोहित पूनिया, नगर अध्यक्ष पवन सैनी, सतपाल पांडिया, देवीलाल मेहरा, सुरेश टाडा, धर्मवीर सिहाग, शिलाराम मेघवाल, दलीप मुहाल, अशोक सरावग, नसीम कुरैशी, नरेश पूनिया, संजय बुरडक व रामकिशन पूनिया आदि ने भव्य स्वागत किया और उन्हें ढेर सारी शुभकामनाएं देते हुए दोनों बेटियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

पालिका बोर्ड की सात माह से बैठक नहीं हुई

सांभरझील, (निसं)। यहां नगर पालिका में कांग्रेस शासित बोर्ड के गठन के प्रारंभ से लेकर आज तक बोर्ड की बैठक निर्धारित मापदंड के अनुसार समय पर नहीं होने से विकास कार्य एक प्रकार से ठप पड़ा है। बोर्ड की बैठक आहूत नहीं करने से पार्षद अपने-अपने अपने वार्ड में विकास कार्यों को करवाने के लिए कोई योजना नही बना पा रहे हैं। बताया जा रहा है कि कांग्रेस के कई ऐसे पार्षद हैं जो खुलकर सामने तो नहीं आ पा रहे हैं लेकिन अब उनकी भी पालिका की कार्यशैली को लेकर काफी नाराजगी बताई जा रही है। विपक्ष की ओर से बोर्ड की बैठक के ऐजेंडा निर्धारण में कोई राय नहीं ली जाती है। सूची में शामिल अनेक लोगों को दरकिनार करके उन लोगों को प्राथमिकता से पट्टे दिए गए जो लिस्ट में काफी नीचे थे। अनिल कुमार गट्टानी पार्षद व नेता प्रतिपक्ष का कहना है कि बोर्ड के गठन के बाद से केवल पालिका अपने मन से राष्ट्रीय पर्व और बजट को लेकर ही बैठक आहूत करता आया है। इसके बाद हमारे लिखित में दिए जाने के बाद ही बैठक बुलाई जाती है। अधिशासी अधिकारी हरिनारायण यादव का कहना है कि जनवरी के लास्ट वीक अथवा फरवरी के प्रथम सप्ताह में बैठक आहूत करवा देंगे।

महज दो-तीन डिग्री पारा बढ़ते ही बीकानेर के स्कूल खुले

बीकानेर, (कासं)। तापमान में महज दो-तीन डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी होते ही जिला प्रशासन ने स्कूल फिर से शुरू करने का फरमान जारी कर दिया। बीकानेर में सोमवार सुबह तापमान चार डिग्री सेल्सियस के आस-पास रहा। दो पारी वाली स्कूल सुबह साढ़े सात बजे से लगी, तब तक सर्दी ज्यादा रही। प्राइवेट स्कूल्स ने अपना समय नौ बजे से कर दिया है पर बच्चों को घर से करीब एक से डेढ़ घंटे पहले निकलना पड़ता है। बीकानेर में पिछले चौबीस घंटे में अधिकतम तापमान 26 डिग्री सेल्सियस से अधिक रहा व न्यूनतम तापमान चार डिग्री सेल्सियस रहा। रात के समय सर्दी से सामान्य राहत ही मिल सकी। शिक्षा विभाग ने स्कूल समय परिवर्तन का अधिकार भी जिला कलक्टर को दिया है।

विश्व भाषा की ओर हिन्दी अग्रसर

अमरावती में जन्मे स्व. गुणाकर मुले ने एक 'भारतीय लिपियों की कहानी' लिखी। उसमें उन्होंने लिखा कि जिस लिपि में यह पुस्तक छपी है, उसे नागरी या देवनागरी लिपि कहते हैं जो लगभग 250 वर्ष पहले बनी। इसके विकास होने से अक्षरों में स्थिरता आ गयी। देवनागरी लिपि में मुख्यतः गुजराती, नेपाली, मराठी, संस्कृत, प्राकृत और हिन्दी भाषाएं लिखी जाती हैं अर्थात हिन्दी तथा इसकी विविध बोलियां, संस्कृत एवं नेपाली आदि इसी लिपि में लिखी जाती हैं।

चूंकि हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है इसलिये ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी ने सन् 1917/18 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन में सबसे पहले हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता प्रदान कर देने की बात सबके समक्ष रख दी थी। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता देने के पक्ष में अपने देश के प्रथम प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरु के अलावा अन्य नेता /शिक्षाविद् जैसे पुरुषोत्तम दास टंडन,व्यौहार राजेन्द्र सिंहजी, सेठ गोविन्द दास मालपानीजी जैसे अनेक लोग भी थे।

इन्हीं सबके चलते संविधान सभा ने एकमत से 14 सितंबर 1949 को इसे राजभाषा का दर्जा देने पर सहमति जताई थी। तत्पश्चात 1950 में संविधान के अनुच्छेद 343(1) के द्वारा हिन्दी को देवनागरी लिपि के रूप में राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ।

लेकिन सेठ गोविन्द दास मालपानी एकमात्र ऐसे राजनेता थे जिन्होंने हिन्दी भाषा के लिये 1961 में मिला पद्मभूषण सम्मान तक न केवल लौटाया बल्कि हिन्दी के विकास के लिये सदन में ऐतिहासिक भाषण दिया।

अब, चूंकि हिन्दी हमारे देश की

गोवर्धन दास बिन्नाणी

राजभाषा है इसी कारण से आजकल प्रशासनिक कार्यों और सरकारी कामकाज के अलावा भी सभी क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग धड़ल्ले से होने लग गया है जिसका बहुत हद तक श्रेय हमारे वर्तमान दृढ़निश्चयी प्रधानमंत्री

- प्रधानमंत्री जी विश्व पटल पर हिन्दी का जिस सशक्त तरीके से प्रयोग कर रहे हैं उसी के फलस्वरूप विदेश में हिन्दी की पैठ बढ़ रही है

जी को जाता है क्योंकि, जैसा सर्वविदित है, मोदीजी हिन्दी में वार्तालाप ही नहीं करते बल्कि अपने सम्बोधन में भी हिन्दी भाषा को प्रमुखता देते हैं।

प्रधानमंत्रीजी शुरु से ही आज तक विश्व पटल पर हिन्दी का जिस सशक्त तरीके से प्रयोग कर रहे हैं उसी के फलस्वरूप विदेश में न केवल हिन्दी की पैठ बढ़ रही है बल्कि आजकल विदेशी शासनाध्यक्ष हो या अन्य उच्च पदाधिकारी भारतीयों के बीच हिन्दी में ही नमस्कार से सम्बोधन शुरू करते हैं। इन्ही सभी कारणों से हम सभी का यही मानना है कि वर्तमान प्रधानमंत्री हिन्दी को एक अलग तरह की वैश्विक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान कर रहे हैं। आज कल देश में भी हिन्दी के प्रति लोगों का रुझान में जिस तरह से परिवर्तन देखने में आ रहा है वह निश्चित रूप से स्वागत योग्य है।

उपरोक्त सभी कारणों से यह सुस्थापित है कि आज के इस बदले समय में राष्ट्रीय एकता में हिन्दी न केवल एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है बल्कि विश्व के अनेक भागों में रहने वालों भारतीयों के साथ साथ विश्वस्तरीय नेताओं के भारतीय नेताओं के बीच व्यवहार में भी।

गोवर्धन दास बिन्नाणी,
जैसलमेर

राशिफल मंगलवार 10 जनवरी, 2023

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2079, अश्लेषा नक्षत्र प्रातः 9:01 तक, प्रीति योग दिन 11:19 तक, विष्टि करण दिन 12:10 तक, चन्द्रमा प्रातः 9:10 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-धनु, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 9:01 तक है। आज भद्रा दिन 12:10 तक है। आज सौभाग्य सुन्दरी व्रत, अंगारक संकष्ट चतुरथी और तिल कुटा चौथ व्रत है। चन्द्रोदय जयपुर में रात्रि 8:51 पर होगा।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:58 से 11:16 तक, लाभ-अमृत 11:16 से 1:52 तक, शुभ 3:10 से 4:28 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:47

मेष
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

कर्क
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
मन में असंतोष बना रहेगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनावश्यक धन खर्च में वृद्धि होगी। व्यावसायिक मामलों में संयम रखना ठीक रहेगा।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। मन में असंतोष और भय बना रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

मकर
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।